AGPE The Royal Gondwana Research Journal of History, Science, Economic, Political and Social Science
ISSN (P): 2582:8800 | A Peer reviewed| Annually| Open Accsess & Indexed
Volume 02 | Issue 01| July 2021| *www.agpegondwanajournal.co.in* |Page No. 100-104

बैगा जनजाति के उत्पत्ति का सिध्दांत (बैगा लोककथाओं के संदर्भ में)

रामानुज प्रताप सिंह धुर्वे
सहायक प्राध्यापक
शासकीय बाला साहेब देशपाण्डे महाविद्यालय कुनकुरी

सारांश:

इतिहास इस बात का साक्षी है कि मानव समाज करोड़ो वर्षो की विकास प्रक्रिया से गुजरता हुआ वर्तमान समाजिक व्यवस्था तक पहुँचा है। भारतीय इतिहास के संदर्भ में देखें तो हमेशा से ही विभिन्न जातियों के उत्पत्तियों के पीछे आलौकिक या धार्मिक प्रभाव देखने को मिलता है। देवी उत्पत्ति का सिद्धांत भारतीय जातियों में आम है। बैगा जनजाति भी अपनी उत्पत्ति को इस दैवीय सिद्धांत से व्यक्त करती है। बैगा जनजाति में अपनी उत्पत्ति को लेकर विभिन्न लोक कथा प्रचलित हैं। बैगा जनजाति मध्यप्रदेश व छत्तीसगढ़ की आदिम जनजाति है। मध्यप्रदेश में यह अनुपपुर, डिंडौरी, मंडला, बालाघाट जिले में व छत्तीसगढ़ के गौरेला पेण्ड्रा मरवाही, मुंगेली, कवर्धा व राजनंदगांव जिले में निवास करती है। छत्तीसगढ़ में इनकी जनसंख्या 89744 व मध्यप्रदेश में 414526 है। कुल जनसंख्या 504270 है। बैगा जनजाति के उत्पत्ति के विषय में आधुनिक शोधो का अभाव है। रसेल व ग्रियसन ने बैगा जनजाति को भुमिया जनजाति का पृथक समुह माना है। बैगा जनजाति के लोग गोंड़ जनजाति के लोगो को अपना बड़ा भाई मानते है। गोंड व बैगा जनजाति के लोग आपस में मिलकर रहते है। बैगा के किवदंती के अनुसार ब्रम्हा ने सृष्टि रचना हेतु दो व्यक्ति उत्पन्न किये एक को नागर (हल) दिया और वह खेती करने लगा वह गोड़ हुआ और दुसरे को टंगिया (कुल्हांडी) दी। वह वन काटने लगा अनुपलब्धता के कारण उसने वस्त्र धारण नही किया । नांगा बैगा कहलाया इसके वंशज बैगा कहलाया।

प्रस्तावना:

भारतीय इतिहास की समृद्धशाली परंपरा के बावजूद भारतीय समाज के कई वर्ग ऐसे है। जिसे भारतीय इतिहास लेखन में उचित स्थान नहीं मिला है। भारतीय इतिहास में पुरुष शुक्त का विशेष महात्व है जिसमें हमें वर्ण व्यवस्था की उत्पत्ति

CORRESPONDING AUTHOR:	RESEARCH ARTICLE
रामानुज प्रताप सिंह धुर्वे सहायक प्राध्यापक - इतिहास विभाग शासकीय बाला साहेब देशपाण्डे महाविद्यालय कुनकुरी, जिला-जशपुर (छ.ग.) **Email:** r4ramanuj.singh@gmail.com	

की जानकारी प्राप्त होती है। भारतीय इतिहास परंपरा को देखे तो हम पायेंगे कि इतिहास में विभिन्न राजवंशो की उत्पत्ति को लेकर विभिन्न ऐतिहासिक विवरण मौजूद हैं। लेकिन भारतीय जनजाति या आदिवासी समाज की उत्पत्ति या उसके ऐतिहासिक योगदान को भारतीय इतिहास में उतना महत्व नहीं दिया गया है। सम्पूर्ण मध्य भारत का क्षेत्र जनजाति बाहुल्य है अनेक जनजाति राजवंश ने यहाँ शासन किया हैं। यहाँ की गौरवशाली समाजिक सांस्कृतिक इतिहास आज भी आदिवासी या जनजाति समाज की ऐतिहासिक आविरल प्रवाह को व्यक्त करती है। बैगा जनजाति मध्य भारत में रहने वाली ऐसी ही जनजाति है जो मध्य प्रदेश छत्तीसगढ़ में निवास करती है।

जनजातियों में भी अपनी स्वयं की उत्पत्ति को लेकर अनेक मिथकीय कहानियाँ प्रचलित है। अनेक इतिहासकारो, समाजशास्त्रीय एवं मानव वैज्ञानिकों ने अपने अपने विचार व्यक्त किये है। बैगा जनजाति में भी अपने उत्पत्ति को लेकर अनेक लोक कथाएं विद्वयमान है। ये लोक कथाएं क्षेत्र व उपजातियों के वर्गीकरण के अधार पर परिवर्तित होते रहते है। भारत का मध्य क्षेत्र अतित से ही सांस्कृतिक व ऐतिहासिक वैभव संपन्ना रहा है यहाँ कि संस्कृति जनजाति विशेषता ली हुई है। बैगा जनजाति आज भी प्रकृतिक वातावरण में प्रकृति के नजदीक रहना पसंद करते है। मध्यप्रदेश व छत्तीसगढ़ में स्थित मैकल पर्वत इसका प्रमुख स्थान है बैगा जनजाति को राष्ट्रपति का दत्तक पुत्र कहाँ जाता है बैगा जनजाति अपने सांस्कृतिक पहचान के लिए जानी जाती है।

आधुनिक ऐतिहासिक प्रमाण:

बैगा जनजाति का सर्वप्रथम अधुनिक ऐतिहासिक वर्णन कैप्टन थॉमसन ने 1867 में किया था। कैप्टन थॉमसन ने सिवनी सेटलमेन्ट रिपोर्ट में एक आदिम जनजाति का वर्णन किया था। उन्होने बैगा जनजाति का वर्णन करते हुए लिखा था कि "सिवनी जिले में पाई जाने वाली यह जनजाति सबसे दुर्गम पहाड़ीयों में रहने वाले जनजातियों में से एक है यह जनजाति अपने धनुष तीर के सहारे घने जंगलो मे शिकार किया करते है। यह पहाड़ी किनारों पर बहुत कम फसल उगाते है। कैप्टन थॉमसन ने इनके शर्मिले स्वभाव का वर्णन करते हुए लिखा था की इनसे बातचीत करना बहुत ही मुश्किल है।"[1] कैप्टन थॉमसन के बाद कर्नल वॉर्ड ने मण्डला सेटलमेंट रिपोर्ट में बैगा जनजाति का विस्तार से वर्णन किया है। वार्ड ने इनकी जीवन शैली की काफी तारीफ किया है।[2] कार्नल वार्ड के उपरंत मध्यप्रांत के प्रमुख प्रशासक कर्नल ब्लुमफिल्ड जो बिलासपुर व बालाघाट के डिप्टी कमिश्नर के पद पर अपनी सेवायें दे चुके थे। उन्होंने 1885 में नोट्स ऑफ बैगास लिखा और बैगा जनजाति की आदिम संस्कृति रहन सहन गरीबी को देखकर मिशनरी सोसायटी को उन्हे धार्मिक व शिष्ट बनाने का आवह्न किया।[3] ब्लुमफिल्ड के बाद रसैल व हिरालाल ने बैगा जनजाति का वर्णन किया है। यह बैगा जनजाति पर इतिहास लेखन की शुरुआत थी।[4] वैरियर एल्विन ने बैगा जनजाति पर विस्तृत अध्ययन किया और 4 इस जनजाति को आधुनिकता के समीप लाने की कोशिश किया।

बैगा जनजाति के लोककथाओं में उत्पत्ति का सिध्दांत :

बैगा अपने आप को जंगल का राजा व सृष्टि के प्रथम मानव ब्रम्हा की संतान कहते है ये अपने आप को अपने मिथको के अनुसार सृष्टि का निर्माता बतलाते है। बैगा जनजाति में स्वयं की उत्पत्ति के बारे में कई मिथक प्रचलित है।

1) पहले चारो ओर जल ही जल था। उस जल में कमल के पत्ते पर ब्रम्हा जी बैठे थे तब ब्रम्हा जी ने पृथ्वी निर्माण के बारे में सोचा और अपने मैल से एक कौए का निर्माण किया और कौआ को आदेश दिया की जाकर पृथ्वी का पता लगाओ। कौआ समुद्र के उपर उड़ने लगा तब उसे केकड़ा की पीठ दिखाई दी। कौआ और केकड़ा दोनो पताल लोक पहुचे वहा कौआ ने किचकमल राजा (केचुआ) को अपने आने का प्रयोजन बताया और उससे पृथ्वी मिट्टी मांगी। किचकमल राजा ने जब मिट्टी देने में आना कानी की तो केकड़े ने उसके गर्दन पकड़ ली और उसके मुँह से धरती की मिट्टी निकलने लगी । केकड़े ने मिट्टी एकत्र कर कौए को दे दी। कौआ वह मिट्टी लेकर ब्रम्हा जी के पास आ गया। तब ब्रम्हा जी ने उस मिट्टी से कलश बनाया तथा नागराज की गोरी और उसी की मथानी बनाई । उस कलश में पृथ्वी की मिट्टी डालकर गोरी और मथानी से खुब मिलाया जब सब मिट्टी मिल गई तो उसे जल में बिखेर दिया । जहाँ-जहाँ मिट्टी बिखेरी वहाँ महाद्वीप बन गई बाकी जगह समुद्र बन गया तब ब्रम्हा जी ने अगरिया बनाया। उसे अगारिया ने लोहे के चार किल बनाये उसके पश्चात् ब्रम्हा जी ने नागा बैगा बनाया तब नागा बैगा ने पृथ्वी के चारो खूँट में खीला ठोक दिया उसी समय से पृथ्वी स्थिर हो गई और बैगा पृथ्वी को सवारने वाले बन गये । बैगा पृथ्वी को बेटी की तरह मनते है। इसी कारण वे पृथ्वी पर हल नही चलाते हैं।[5]

2) शुरू शुरू पुरे संसार में जल ही जल था. एक दिन कमल के फूल पर ब्रम्हा जी बैठे दिखे । वहा जल ही जल था न फल थे न फूल थे तब ब्रम्हा जी ने अपने भुजा को रगड़ कर मैल निकाला उससे एक कौआ बनाया और उससे कहा की जाओ और पृथ्वी का पता लेकर आओ मै सृष्टि का निर्माण करना चाहता हूँ । कौआ वहा से उड़ा वह निराश होकर लौटने लगा तो उसे किकरामल कुंवर मिला कौऐ ने उससे अपने समस्या बताई । तब किकरामल कुवर ने उसे लुंगडी राजा के पास ले गया। लुंगडी राजा ने एक बहुत बड़ी कोठी बनाई जिसमे किकरामल कुंवर और कौआ घुस गये। लुंगड़ी राजा ने एक लोटे के चैन के सहारे समुद्र में डाल दिया और वहा जब तुम दोनो चैन को हिलावोगे तो मैं तुम्हे उपर खीच लुंगा। जब वे दोनों समुद्र के अंदर पहुचे तो किचमल राजा सो रहे थे । कोठी उसके सिर के पास गिरी जिसके कारण वह उठ गये और क्रोधित हो उन्हें खाने की कोशिश की कौआ ओर किकरामल कुंवर ने उससे धरती की मिट्टी मांगी तो वह आना कानी करने लगा। तब किकरामल कुंवर ने उसको अपने जबड़ो मे दबा लीया। उसकी गर्दन दबाते ही किचमल राजा के मुंह से धरती की मिट्टी निकलने लगी। उसने इक्कीस बार गर्दन दबाई और इक्कीस प्रकार की मिट्टी निकली। मिट्टी निकलने के बाद किकरामल कुंवर और कौआ ने जंजीर हिलाई तो लुंगड़ी राजा ने उनकी कोठी को चैन के सहारे खीच लिया तब कौआ मिट्टी (धरती) लेकर भगवान के पास पहुचां तब ब्रम्हा जी ने साजा वृक्ष के पत्तियों से एक बर्तन बनाया और उसमे धरती को रख दिया फिर धरती को आठ दिन और नौ रात तक खूब गुथा । पृथ्वी के गुथ जाने के बाद उस धरती के मिट्टी को ब्रम्हा जी ने बेल के एक रोटी का रूप दे दिया। धरती रूपी रोटी को समुद्र के जल में बिछा दिया जैसे ही धरती के मिट्टी को समुद्र के जल में बिछाया तो वह किचड़ बन का बहने लगी । तब भगवान दसएरी को बुलाया तब मुह से गर्म हवा फेकी जिससे मिट्टी सुख कर जम गई और पुरी पृथ्वी कड़ी हो गई तभी से पृथ्वी का जन्म हुआ।[6]

3) डॉ. बरियर एल्विन के अनुसार बाबा वशिष्ठ मुनि भगवान का गुरू था तेरह साल तक उसने तुम्बी मे पेशाब की तेरहवे साल तुम्बी टुट गई और नागा बाबा रोते हुए बाहर निकला जब बाबा ने देखा तब वह क्रोधित हुआ और उसने बच्चे को जंगल में फेक दिया जैसे ही वह गिरा उसे नागिन ने पकड़ लिया और उसे दो बुंद अपना दूध दिया फिर उसने उसे चीटियों के बमीठे में छुपा दिया। इसके बाद काली नागिन ने नंगी बैगीन को जन्म दिया चिटीयो के बमीठे के दो हिस्से थे एक में लड़का रहता था और दुसरे में लड़की रहती थी।[7]

4) बहुत समय पहले चारो ओर समुद्र था उसमे जल ही जल था एक कमल का फूल और कुछ पत्ते थे कमल में देवता गण बैठते थे । एक दिन हवा और पानी एक साथ आया और कमल और पत्तों में बैठे देवतागण भीग गये जिससे उन्हें गुस्सा आ गया तब ब्रम्हा जी ने अपन मन में खुब सोचा विचारा और समुद्र के पानी पर पृथ्वी बनाने की सोची, परंतु उस समय पृथ्वी का कही भी पता नहीं था। समुद्र में एक जम्मबू द्वीप था जिसमे नागा बैगा निवास करता था सभी देवता गण उनके पास गये, उन्होंने नागा बैगा से विनती की कि वह धरती का पता लगा कर आये तब नागा बैगा ने वचन दिया था कि वह धरती का पता जरूर लगा कर आयेगा ।

नगा बैगा को भी धरती का पता ज्ञात नहीं था। उसने मंत्र शक्तियों से कौआ कुंवर का आहवान किया तब नागा बैगा ने देवताओ से हुई बात बताई और तुम धरती का पता लगाकर ही लौटना। तब कौआ कुंवर ने बादल के समान अपने शरीर को बड़ा दिया । वहा अकाश में कई सालो तक उड़ता रहा, जब वह निराश होकर लौटने लगा तो उसे एक केकड़े की पीठ दिखाई दी। केकड़ा उस समय सूर्य की अराधना कर रहा था । कौआ उस पर बैठ गया। केकड़े ने क्रोधित होकर पुछा की तुम मुझे क्यों परेशान कर रहे हो? तक कौऐ ने कहा की मुझे ब्रम्हा जी ने मुझे धरती का पता लगाने भेजा है। तक कौआ केकड़े की पीठ पर सवार होकर हाडन राजा के पास पहुचे वहा एक तलाब और उसके पास हड्डियो का पहाड़ था उस तलाब एक नाग कन्या स्नान करने आई वह अति सुंदर थी दोनों ने उसे पृथ्वी समझा। केकड़े ने हाडन राजा की बुराइयां बतलाकर अपने जाल में फँसा लिया । कौआ और केकड़ा उस नाग कन्या को लेकर चले तो उसे रास्ते में केचुआ नामक दानव मिला। उसने नाग कन्या को निगल लिया केकड़ा और कौआ दोनो परेशान हो गये इतने में गिलहरी आई और उसने बताया की तुम अपने नुकिले दांतो से केचुआ दानव का पेट फाड़ दो। तब केकड़े ने अपने जबड़ो को केचुवे दानव के पेट में चुभा दिया जिससे केचुऐ ने बीट कर नाग कन्या को छोड़ दिया तक केकड़ा और कौआ नाग कान्या को लेकर देवताओ के पास गये इन्होने इनके पास एक सुन्दर कन्या को देखकर खुब स्वागत किया।

देवताओ ने समुद्र के उपर उस नाग कन्या का विवाह रचाने की सोची परंतु कन्या को कोई भी वर पसंद न ही आया तब देवताओ ने जम्बुद्वीप से नाग बैगा को आमंत्रित किया। नाग बैगा निर्वस्त्र साधू के वेश में था। नाग कन्या ने नागा बैगा के गले में वर माला डाल दिया जिस पर नाग बाबा नराज हो गये। उन्होनें कहा कि इस कन्या को तो मैं बेटी मान चुका हूँ। उन्होनें कुल्हाड़ी से उस नाग कन्या के दो टुकड़े कर दिये जिससे उस कन्या का रक्त पुरे समुद्र में फैल गया जिससे नागा बैगा तथा

देवताओं ने थपथपाया जिससे वह जम गया तथा वहा पृथ्वी की सतह बन गई । ज्वार भाटा के लहरों के कारण उचे स्थान पहाड़ बन गये और नीचे स्थान झील तथा समुद्र बन गया।[8]

5) पहले पहल धरती नहीं थी चारो तरफ जल ही जल था। एक दिन ब्रम्हा जी ने जल में धरती बनाई उस समय धरती फोड़ कर दो साधू निकले। पहला साधू ब्राम्हाण व दुसरा साधू नागा था । ब्रम्हा ने ब्राम्हण को लिखने पढ़ने के लिए कागज थमा दिया और नागा बैगा को टंगिया दे दिया ब्रम्हा ने नागा बैगा को कोदो कुटकी देकर खेती करने का आदेश दिया तब से बैगा जंगल काट कर खेती करते है। एक अन्य किवन्दंती के अनुसार ब्रम्हा ने सृष्टि रचना हेतु दो व्यक्ति उत्पन्न किये एक को नागर (हल) दिया और वह खेती करने लगा वह गोड़ हुआ और दुसरे को टंगिया (कुल्हांड़ी) दि वह वन काटने लगा अनुपलब्धता के कारण उसने वस्त्र धारण नहीं किया। नांगा बैगा कहलाया इसके वंशज बैगा कहलाया।[9]

निष्कर्ष :

हम अगर सभी बैगा उत्पत्ति का मिथक का अध्ययन करते है तो पाते है कि बैगा जनजाति कि सभी मिथकिय कहानियों में जल, केकडा, केचूआं का विशेष उल्लेख मिलता है। बैगा जनजाति यह मानते है कि चारो तरफ पहले जल था ब्रम्हा जी ने पहले पृथ्वी का निर्माण किया और पृथ्वी से बैगा जनजाति उत्पन्न हुई इस बैगा जनजाति पृथ्वी को अपनी माता मानते हैं। बैगा जनजाति के लोक कथाओं पर आधारित उत्पत्ति का सिद्धांत पुर्णतः दैवीय सिद्धांत का समर्थक है। बैगा जनजाति भारत की प्रमुख आदिम जनजातियों में से एक है। लेकिन उत्पत्ति के सिद्धांत में दैविय प्रभाव स्पष्ट रूप से नजर आता हैं। बैगा जनजाति प्रकृति को आत्मसात करने वाली जनजाति है। प्रकृति से ही अपनी उत्पत्ति स्वीकार करती है। प्रकृति को ही आदि शक्ति या हिन्दु धर्म के परिणाम स्वरूप उन्हे ब्रम्ह का नाम देकर अपने उत्पत्ति को स्वीकारती है।

संदर्भ सूची:

1) थॉमसन डब्लू. बी. रिपोर्ट ऑफ दि लैण्ड रेवेन्यु सेंटलमेट ऑफ दी सिवनी डिस्ट्रक्टि, बॉम्बे 1867 पृ. 39
2) वॉर्ड एच. सी. ई. रिपोर्ट ऑफ दी लैण्ड रेवेन्यु सेंटलमेट ऑफ दि मण्डला डिस्ट्रक्टि बॉम्बे 1867 पृ. 36
3) एल्विन वेरियर, दि बैगा, जॉन मैरी अल्बेमलै स्ट्रीट, लंदन 1939 पृ. 2
4) चौरसिया वी प्रकृति पुत्र बैगा, मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी 2004 पृ. 27
5) एल्विन वेरियर पुवोक्त पृ. 308-310
6) तिवारी वी. के भारत की जनजातियाँ, हिमालया पब्लिशिंग हाउस 1998 पृ. 277
7) तिवारी वी. के. छत्तीसगढ़ की जनजाति, मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी 2001 पृ. 76
8) जनक ऐ. भारत के आदिवासी मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी 1957 पृ.27
9) अलंग एस., छत्तीसगढ़ की जनजातियाँ और जातियाँ, मानसी पब्लीकेशन दिल्ली 6 पृ. 28

■ ■ ■